शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 1; जूलाई-दिसंबर, 2020; पृष्ठ संख्या : 12-22

विद्यापति कृत 'पदावली' और शंकरदेव-कृत 'कीर्तन-घोषा' में चित्रित भक्ति एवं शृंगार

बर्णाली बैश्य

शोध-सार

विश्व साहित्य में भारतीय साहित्य का अन्यतम स्थान है। भारतीय साहित्य का भंडार अनेक महान साहित्यकारों के योगदान के परिणामस्वरूप समृद्ध हुआ है। इन्हीं लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकारों में विद्यापति और शंकरदेव क्रमशः हिंदी और असमीया साहित्य के दो अन्यतम हस्ताक्षर हैं। साहित्यिकत देन के साथ-साथ सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन में भी विद्यापति और शंकरदेव की अन्यतम भूमिका रही है। विद्यापति हिंदी साहित्य के संक्रमण काल के कवि रहे, जबकि शंकरदेव असमीया वैष्णव-युग या भक्ति काल के। किंतु अपने-अपने क्षेत्रों में दोनों की ही प्रासंगिकता सजीव रूप में विद्यमान है। यद्यपि विद्यापति और शंकरदेव ने अनेक रचनाएँ लिखकर भारतीय साहित्य को अमूल्य योगदान दिया है, फिर भी दोनों की प्रसिद्धि के पीछे विशेष रूप से क्रमशः 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' ही हैं। 'पदावली' मैथिली भाषा में रचित विद्यापति की अमूल्य रचना है। 'पदावली' ही विद्यापति की लोकप्रियता का मुख्य कारण है। पदावली शृंगार रस से प्लावित और पल्लवित है। शृंगार के अतिरिक्त इसमें भक्तिरस का भी चित्रण हुआ है। 'कीर्तन-घोषा' जैसी अमूल्य कृति की रचना शंकरदेव ने एकशरण हरिनाम धर्म के प्रचार हेतु असमीया भाषा में की। भगवत भक्ति के लिए शंकरदेव ने जिन घोषा गीतों की रचना की उन्हीं का संकलित रूप 'कीर्तन-घोषा' है। भक्ति भावना के अनुपम निदर्शन के साथ ही इसमें शृंगार का भी चित्रण द्रष्टव्य है। मैथिल प्रदेश में पदावली जितनी लोकप्रिय है, उतनी ही असमीया भक्तवत्सल जीवन में कीर्तन-घोषा प्रसिद्ध है। दोनों ही कृतियों में भक्ति और शृंगार रस का चित्रण हुआ है।

बीजशब्दः *विद्यापति, शंकरदेव, भक्तिभावना, शृंगार।*

प्रस्तावना

हिंदी काव्यधारा के सुदीर्घ इतिहास में विद्यापति एक ऐसे अनोखे व्यक्तित्व तथा कवि के रूप में उभरे, जो आज भी मिथिलांचल के लोकमानस में निरंतर बने हुए हैं। उनकी लोकप्रियता सिर्फ मिथिलांचल में ही नहीं, अपितु पूरे हिंदीभाषी क्षेत्र में तथा पूर्ण भारत में व्याप्त रही है। विलक्षण प्रतिभा के धनी कवि विद्यापति आदिकाल और भक्तिकाल की काव्यचेतना के संधिकाल के कवि के रूप में जाने जाते हैं। यद्यपि उनकी अधिकतर रचनाएँ संस्कृत में ही हैं, किंतु साथ ही अवहट्ट और मैथिली पर उनका समान अधिकार था। 'पदावली' उनकी श्रेष्ठतम रचना मानी जाती है। चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी में आविर्भूत होकर हिंदी काव्यधारा को मुख्यतः शृंगार रस से सराबोर कर देनेवाले कवि विद्यापति का भारतीय साहित्य में उल्लेखनीय स्थान रहा है। वर्तमान समय में शंकरदेव केवल असम या भारतवर्ष में ही प्रसिद्ध नहीं हैं, बल्कि विश्व दरबार में उन्हें मानवता के मसीहा का दर्जा दिया जाता है। असमीया नव-वैष्णव धर्म के प्रचारक तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी शंकरदेव का व्यक्तित्व भी असाधारण था। संस्कृत, ब्रजावली और असमीया में रचित उनकी अनेक प्रसिद्ध रचनाओं में से 'कीर्तन-घोषा' को श्रेष्ठतम दर्जा दिया जाता है। मूलतः भक्तिप्रधान होने के साथ-साथ 'कीर्तन-घोषा' में शृंगार का भी अनुपम निदर्शन दृष्टिगोचर होता है। विद्यापति और शंकरदेव कृत क्रमशः 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' का महत्व कई दृष्टियों से हैं। दोनों ही रचनाएँ अपने-अपने रचयिताओं की प्रतिभा का अन्यतम निदर्शन है। प्रांतीय भाषा में रचित दोनों ही कृतियाँ भारतीय साहित्य के लिए अन्यतम दस्तावेज हैं। दोनों कृतियों का वर्तमान समय में जनजीवन के साथ गहरा सम्बन्ध है।

विषय की सीमाबद्धता की दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन में विद्यापति कृत 'पदावली' और शंकरदेव कृत 'कीर्तन-घोषा' में चित्रित भक्ति भावना और शृंगार भावना को ही केंद्रबिंदु के रूप में लिया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य लक्ष्य विद्यापति कृत 'पदावली' और शंकरदेव कृत 'कीर्तन-घोषा' में चित्रित भक्ति एवं शृंगार का तुलनात्मक विश्लेषण करना है।

प्रस्तुत आलेख की प्रस्तुति के लिए प्रिंट स्रोतों से प्राप्त सहायक ग्रंथों का संकलन कर उनका विचार-विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में विश्लेषणात्मक एवं विवेचनात्मक शोध-पद्धति का प्रयोग किया गया है।

असमीया भाषा में 'स' उच्चारणवाले दो वर्ण हैं- 'च' और 'छ'। असमीया भाषा में 'स' के लिए कोमल 'ह' का उच्चारण होता है। असमीया के 'स', 'च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिंदी

लिप्यंतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गए हैं। हिंदी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण चलते हैं- एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है। असमीया 'य' के लिए हिंदी में भी 'य' रखा गया है, पर असमीया के 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यांतरण में 'य़' रखा गया है।

विश्लेषण

भक्ति और शृंगार दोनों प्रवृत्तियाँ मध्यकालीन भारतीय साहित्य में पाई जाती हैं। भक्ति और शृंगार दोनों के स्वरूप तथा अभिव्यंजना अलग-अलग रूपों में हैं। दोनों की परिभाषाएँ भिन्न-भिन्न हैं। विद्यापति और शंकरदेव की अन्यतम रचना क्रमशः 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' में भी भक्ति तथा शृंगार का अनुपम चित्र विद्यमान है, जिसका अध्ययन- विश्लेषण ही प्रस्तुत पत्र का मुख्य ध्येय है। उसके पूर्व 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक है।

'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' का परिचय

पदावली

संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित विद्यापति ने संस्कृत में 13 रचनाएँ कीं; किंतु 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' (बेनीपुरी2011:16) कहकर जनभाषा में समय-समय पर जो पद गाते रहे, उसी का संग्रहीत रूप पदावली के कारण कवि विद्यापति की ख्याति दूर दूर तक फैली। जीवन काल में ही विद्यापति को प्रसिद्धि तथा भरपुर लोकप्रियता मिली, जिसका प्रमुख श्रेय उनकी एकमात्र अक्षय कृति पदावली है। 'गीत-गोविंद' के रचयिता जयदेव को आदर्श मानकर ही 'पदावली' की रचना की गयी है। मैथिली भाषा में रचित 'पदावली' की रचनाधर्मिता, कोमलकांत मधुर शब्द-योजना तथा गेयता के कारण विद्यापति को 'अभिनव जयदेव', 'मैथिल-कोकिल', 'कवि-कंठहार' आदि विभिन्न नामों से विभूषित किया गया है। 'पदावली' केवल विद्यापति का ही कीर्तिस्तम्भ नहीं, वरन यह हिंदी साहित्य के लिए भी अमूल्य वरदान है। विद्यापति की 'पदावली' का आदर राजमहलों से लेकर कुटिया तक समान रूप से होता आया है। जहाँ तक विद्यापति की 'पदावली' के पदों की संख्या का प्रश्न है , उसका निश्चित उत्तर दे पाना दुरूह कार्य है। पदावली के पदों का संकलन कार्य अब तक अनेक विद्वानों द्वारा हो चुका है। ग्रियर्सन के बाद डॉ. नगेन्द्रनाथ गुप्त ने 935 पदों का संकलन कर 'विद्यापति की पदावली' नाम से प्रकाशित किया। इसी आधार पर अन्य लेखकों के द्वारा भी विद्यापति के पदों के संकलन प्रकाशित किये गये हैं। गुप्त के बाद सबसे प्रामाणिक खगेंद्रनाथ मिश्र और

विमानबिहारी मजुमदार ने 939 पद प्रकाशित किये। इसमें गुप्तजी के 203 पद को छोड़कर 207 नये पद मिश्र-मजुमदार ने जोड़े। वैसे गुप्त जी द्वारा प्रमाणित 935 पदों के साथ यदि मिश्र-मजुमदार के 207 नये पद जोड़े जाए तो इसकी संख्या 1142 होती है। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा तीन खण्डों में विद्यापति पदावली का प्रकाशन किया गया है। इस आधार पर भी पदावली की संख्या लगभग 1142 ही ठहरती है। विषय की दृष्टि से पदावली में एकसूत्रता नहीं है। विषय की दृष्टि से इसे तीन प्रमुख भागों में बाँटा जा सकता है-

(क) भक्ति विषयक पद

(ख) शृंगार विषयक पद और

(ग) विविध विषयक पद

कीर्तन-घोषा

बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा विशिष्ट व्यक्तित्व के अधिकारी महापुरुष शंकरदेव की अक्षय कृति हैं 'कीर्तन-घोषा'। शंकरदेव ने एकशरण- हरि नामधर्म के प्रचार हेतु समय-समय पर जिन घोषा गीतों की रचना की थी, उन्हीं का संकलित रूप 'कीर्तन-घोषा' है। शंकरदेव के देहावसान के बाद उनके प्रिय शिष्य माधवदेव ने अपने भांजे रामचरण ठाकुर द्वारा विभिन्न सत्रों से सामग्री का संकलन कर 'कीर्तन-घोषा' का संपादन कार्य कराया। भांजे रामचरण ठाकुर की प्रशंसा में माधवदेव कहते हैं -

मोर गुरुवरजने गोटाव दिछिल, मइ नुयाइलौं,
गुरुबाक्य परि आछिल सार्थक, भागिन धन,
गुरुबाक्य राखिले मोर। (मजुमदार2014:62)

अर्थात् माधवदेव के गुरु शंकरदेव ने उन्हें यह काम सौंपा था; पर वह काम उससे नहीं हुआ। बाद में भांजे रामचरण ने इस कार्य को पूरा कर गुरु के सामने पेश किया था ।

सत्रों तथा नामघरों में संकीर्तन करने के लिए इन घोषा-पदों को सामूहिक रूप में गाया जाता है। भक्तजन बड़े ही आदर तथा श्रद्धापूर्वक इन गीतों का संकीर्तन करते हैं। 'कीर्तन-घोषा' में 29 खण्डों के अंतर्गत 189 कीर्तन हैं, जिनकी छंद सख्याएँ 2,384 हैं। 'कीर्तन-घोषा' में संकलित 29 खण्ड इसप्रकार हैं- चतुर्विंशति अवतार बर्णन, नामापराध, पाषण्ड मर्दन, ध्यानबर्णन, अजामिलोपाख्यान, प्रह्लाद चरित्र, गजेंद्रपाख्यान, हरमोहन, बलिछलन, शिशुलीला, कालीय दमन, रास-क्रीड़ा, कंसबध, गोपी-उद्धव संवाद, कुजीर बांछा पूरण, अक्रुरर बांछा पूरण, जरासंध युद्ध, कालयवन बध, मुचुकंद स्तुति, स्यामंत हरण, नारदर कृष्णदर्शन, बिप्र पुत्र आनयन, दामोदर विप्रोपाख्यान, देवकी पुत्र आनयन, वेद स्तुति, लीला-माला, श्रीकृष्णर वैकुण्ठ प्रयाण, ऊरेषा वर्णन और भागवत तात्पर्य वर्णन। शंकरदेव ने श्रीमदभागवत, गीता, पद्मपुराण, ब्रह्मपुराण आदि शास्त्रों-ग्रंथों के सार तत्वों को

ग्रहण कर उन्हींके आधार पर अपनी मौलिक प्रतिभा के बल पर 'कीर्तन-घोषा' की रचना की।

'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' में चित्रित भक्ति भावना

'भक्ति' शब्द की व्युत्पत्ति 'भज्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'सेवा करना' या 'भजना'। अर्थात् प्रेमपूर्वक अपने इष्ट के प्रति निहित समर्पण भाव ही भक्ति है। साहित्य मनीषियों के समक्ष विद्यापति बहुत विवाद का विषय रहे हैं । इनके काव्य-संसार को देखकर विद्वानों में किसी ने इन्हें भक्त कहा तो किसी ने शृंगारी। पदावली के आधार पर यदि विद्यापति के काव्य-संसार को बाँटे तो राधा-कृष्ण विषयक ज्यादातर गीत शृंगारिक हैं; पर भक्ति विषयक गीतों में प्रमुख हैं- कृष्ण बंदना, गंगा स्तुति, देवी बंदना, शिव स्तुति, कृष्ण प्रार्थना आदि। विद्वानों के मतों के अतिरिक्त विद्यापति को भक्त सिद्ध करनेवाली अनेक दंतकथाएँ, जनश्रुतियाँ आदि भी प्रचलित हैं। इसके साथ ही विद्यापति द्वारा लिखे गए भक्ति संबंधी प्रचुर गीत हैं। अनेक विद्वान विद्यापति को शैव या शाक्त मानते हैं। किंतु उन्हें वैष्णव कहनेवाले और कृष्ण भक्त के रूप में देखनेवाले आज भी अपने आग्रह पर दृढ़ हैं। डॉ. जयनाथ 'नलिन' के अनुसार-

> भाषा और भावों की सूक्ष्मता, प्रांजलता, गहनता और सघनता के विकास क्रम की कसौटी माने तो क्रमशः शैव, शाक्त और वैष्णव धर्म की ओर उनका अग्रसर होना निश्चित होता है।
>
> (दीक्षित :55)

इतना ही नहीं डॉ. नलिन को विद्यापति के काव्य में कृष्ण भक्ति के स्वर्ण सरोज दिखाई देते हैं।

'पदावली' के भक्ति विषयक पदों के संदर्भ में आनंद प्रकाश दीक्षित ने कहा है -

> भक्ति के क्षेत्र में विद्यापति किसी भी सम्प्रदाय से नहीं जुड़ते। कृष्ण, शिव, शक्ति, गंगा आदि सभी के प्रति आत्मनिवेदन करते हैं। (दीक्षित:61)

जीवन के अंतिम काल में कविवर विद्यापति ने 'पदावली' में संसार की स्वार्थपरकता और आत्मग्लानि का चित्रण इस प्रकार किया है। एक उदाहरण निम्नलिखित है -

> जतने जतेक धन पाये बटोरलु, मिलि मिलि परिजन खाए ।
> मरनक बेरि हरि केओ नहिं पूछत करम संग चलि जाए ।।
> तुअ रद परिहरि पाप- पयोनिधि, पारक कओन उपाए ।।
>
> (बेनीपुरी2011:156)

यहाँ विद्यापति यह स्पष्ट कहते हैं कि अब केवल भगवान के चरणों का ही सहारा है। अन्यथा और कोई उपाय नहीं। संसार-सुख की क्षणभंगुरता का बोध होने पर विद्यापति अपनी व्यथा का

चित्रण करते हुए भगवान की प्रार्थना इस प्रकार करते हैं, उदाहरणस्वरूप-

माधव, कि कहब तिहरो गेआन ।
सुपहु कहल जब रोष कएल तब तकें मुँनल
दुहु कान।। (बेनीपुरी2011:156)

पश्चाताप करते हुए भगवान के प्रति कवि की अनन्य भक्ति और दैन्यतापूर्ण हृदयोद्गार का वर्णन 'पदावली' में कई जगह द्रष्टव्य हैं। पदावली में देवादिदेव शंकर के अर्द्ध नारीश्वर रूप का वर्णन कर विद्यापति ने शिव की वंदना की है। उदाहरणस्वरूप -

जय जय संकर, जय त्रिपुरारि।
जय अध पुरुष जयति अध नारि ॥
आध धबल तनु आधा गोरा।
आध सहज कुच आध कटोरा ॥
आध हड़माल आध गजमोति।
आध जानन सोह आध बिभूति ॥
आध चेतन मति आध भोरा।
आध पटोर आध मुँजडोरा ॥

(बेनीपुरी2011:150)

इसी प्रकार 'कनक भूधर वासिनी' पद में आदि शक्ति दुर्गा की वंदना कर कवि ने आदिशक्ति दुर्गा में ब्रह्मा, विष्णु, महेश के त्रिगुणात्मक स्वरूप की कल्पना की है। उसी प्रकार उनके विश्वासानुसार गंगा स्तुति करने से सारे पापों का नाश होता है।

पंद्रहवीं शताब्दी में समग्र भारतवर्ष में भक्ति आंदोलन का व्यापक प्रभाव पड़ा था। तत्कालीन परिस्थितियों में असम में शंकरदेव ने इसी से प्रभावित होकर नववैष्णव धर्म का प्रवर्तन कर इसका प्रचार तथा प्रसार किया। उसका मूल मंत्र था- 'एक देव, एक सेव,एक बिने नाई केव ।' कृष्ण को विष्णु के पूर्ण अवतार मानकर शंकरदेव ने कहा है कि - "कृष्णंतु भगवान स्वयम" (बायन2014:89) है। 'कीर्तन-घोषा' शंकरदेव की भक्तिसाधना का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है। कीर्तन-घोषा कथात्मक भक्ति काव्य है। कलिकाल में नामधर्म को ही युगधर्म के रूप में स्वीकार किया गया है, जिससे भक्ति के श्रेष्ठ स्वरूप का प्रकाशन देखने को मिलता है। कीर्तन-घोषा में अवतार तत्व, वेदांत दर्शन, निष्काम भक्ति, दास्य-भाव, सत्संग-महिमा, माया से उद्धार हेतु भक्ति की प्रयोजनीयता, भगवान का भक्तवत्सल रूप, शिशु कृष्ण की बाल-लीला, अजामिल जैसे पापी का उद्धार आदि विषयक गीत हैं।

'प्रथमे प्रणामो ब्रह्मरूपी सनातन सर्व अवताररर कारण नारायण' (गोस्वामी1989:1)- कहकर 'चतुर्विंशति अवतार' तत्व का वर्णन कर भगवान के अद्वैतवाद के स्वरूप और महिमा का वर्णन किया है। एकशरण धर्म के मूलतत्व को 'नामापराध' में दिखाकर हरिनाम के महत्व को बताया है। उदाहरणस्वरूप -

नामत यतन करा हरिषि ।
नामेसे करिबे परम सिद्धि ॥

(गोस्वामी 1989:14)

अर्थात हर्षित होकर नाम में मन लगाइए। नाम ही परम सिद्धि करेगा। हरिनाम लेने से परम सिद्धि प्राप्त होती है। हरिनाम के महत्व को वे जानते थे। अतः बार-बार वर्णन करने में शंकरदेव थकते नहीं हैं। वे कहते हैं -

आगम पुराण यत वेदांतरो तात्पर्य
जानि करा भकतिर सार ।
श्रवण कीर्तन बिना आन पूण्य नापाय जाना
इटो घोर संसारर पार ॥

(बायन2014:111)

अर्थात आगम, पुराण, वेदान्त का तात्पर्य भक्ति है, यह जानकार भक्ति को सार मान लीजिये। इस संसार को पार करने के लिए श्रवण-कीर्तन के बिना अन्य में पुण्य नहीं मिलता।

'कीर्तन-घोषा' के संदर्भ में डॉ. लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा का कथन है -

> कि उच्च भाव, कि उच्च प्रार्थना, कि स्तुति, कि शोक, सकलो वर्णनाते शंकरदेवे मुधा फुटाइ गैछे। शंकरदेवे यदि आन पुथि रचना नकरिलेहँतेन, तथापि कीर्तन-घोषार बाबेइ तेओँ जगतत अमर है थाकिलहँतेन।

(बायन 2014:109)

अर्थात भाव, प्रार्थना, स्तुति, शोक आदि समस्त वर्णनों में शंकरदेव ने अद्वितीय प्रतिभा का परिचय दिया है। यदि शंकरदेव अन्य ग्रन्थों की रचना न भी करते, फिर भी 'कीर्तन-घोषा' के लिए ही वे संसार में अमर रह जाते हैं ।

यहाँ 'कीर्तन-घोषा' की रचनाधर्मिता, भक्ति-भावना एवं भाव-सौंदर्य को उच्चतर बताते हुए डॉ. बेजबरुवा ने 'कीर्तन-घोषा' को शंकरदेव की अमर कीर्ति माना है ।

साम्य

'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' में दास्य-भक्ति तथा आत्मसमर्पण का निदर्शन हमें देखने को मिलता है। विद्यापति की पदावली का एक उदाहरण निम्नलिखित है -

माधव बहुत मिनति कर तोहि ।
दए तुलसी तिल देह समरपल, दया जनि
छाड़व मोहि ॥
भनई विद्यापति अतिशय कातर, तरइते ई
भव-सिंधु ॥
तुअ पद-पल्लव केर अवलंबन, तिला एक
देह दिनबंधु ॥

(कपूर1968:415)

शंकरदेव ने भी 'कीर्तन-घोषा' के 'प्रह्लाद चरित्र' में नवधा भक्ति के महत्व पर प्रकाश डाला है-

श्रवण कीर्तन स्मरण बिष्णुर
अर्चन पद सेवन ।
दास्य सखित्व बंदन बिष्णुर
करिब देहा अर्पन ॥
(बायन2014:111)

अर्थात श्रवण, कीर्तन, विष्णु का स्मरण, अर्चन, पदसेवन, दास्य, सख्य, विष्णु का वंदन और शरीर का अर्पण करूँगा ।

विद्यापति कृष्ण को परमब्रह्म मानते हैं। शंकरदेव ने भी भगवान को अवतारी रूप में चित्रित किया है ।

वैषम्य

विद्यापति की 'पदावली' की तुलना में शंकरदेव की 'कीर्तन-घोषा' में भक्तिप्रधान पद अधिक हैं ।

विद्यापति ने 'पदावली' में शिव, गंगा, दुर्गा, कृष्ण सभी की वंदना की हैं। परंतु शंकरदेव की 'कीर्तन-घोषा' में विष्णु के अवतार कृष्ण का ही वर्णन है।

'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' में चित्रित शृंगार भावना

'शृंगार' (शृंगपूर्वक त्र धातु + अण) शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- 'शृंग' और 'आर'। 'शृंग' का अर्थ है कामोद्रेक अथवा काम की वृद्धि तथा 'आर' का अर्थ है कामवृद्धि की प्राप्ति। कुल मिलाकर शृंगार शब्द कामवासना की संवृद्धि अथवा प्राप्ति का प्रतीक है। शृंगार का स्थायी भाव है रति। भारतीय सारित्य में कवि- साहित्यकारों ने खूब रमकर शृंगार की दोनों अवस्थाओं (संयोग और वियोग) का चित्रण किया है। यह शृंगार ही रसों का राजा कहलाता है ।

विद्यापति संस्कृत साहित्य और भारतीय काव्यशास्त्र के निष्णात पंडित थे। रससिद्ध कवि विद्यापति ने भी शृंगार के क्षेत्र में प्रवेश किया और उसका कोई भी कोना अछूता नहीं छोड़ा। विद्यापति की 'पदावली' में शृंगार अपने चरमोत्कर्ष तक पहुँचा है। विद्यापति ने नायक-नायिका के रूप में राधा और कृष्ण को चुना। विद्यापति ने शृंगार के दोनों पक्षों- संयोग और वियोग का पूर्णरूपेण कुशलतापूर्वक चित्रण किया। विद्यापति की 'पदावली' राधा-कृष्ण के

प्रेम-प्रसंगों का अपूर्व तथा अक्षय भंडार है। संयोग शृंगार में रूप वर्णन यहाँ प्रधान होता है। नख-शिख, वेश-भूषा, आकृति-प्रकृति आदि की चर्चा होती है।

विद्यापति ऐसे चित्रण में पारंगत हैं। एक उदाहरण निम्नलिखित है -

पल्लवराज चरनजुग सोभित
गति गजराज क भाने ।
कनक कदलि पर सिंह समारल
ता पर मेरू समाने ॥
मेरू उपर दूइ कमल फुलायल
नाल बिना रूचि पाई ।
मनिमय हार धार बहु सुरसरि
तओ नहीं कमल सुखाई ॥
अधर बिम्बसन दसन दाड़िम बिजु
रवि ससि उगथिक पासे ।
राहु दूर बस नियरो न आवथि
तैं नहिं करथि गरासे ॥

(बेनीपुरी2011:41)

इस प्रकार विद्यापति ने शृंगार रस के विकास की सभी अवस्थाओं, जैसे - वयःसंधि, नायिकाओं के मुग्धा, परकीया, अज्ञातयौवना, मानिनी, वासकसज्जा, दिवाभिसारिका, कृष्णाभिसारिका आदि रूपों का वर्णन किया है। राज-दरबार के विलासितापूर्ण वातावरण में शृंगारिक पदों की मांग के अनुसार शृंगार के शिरोमणि कवि विद्यापति ने शृंगार रस की सर्वांगपूर्ण स्थितियों का वर्णन किया है। मिलन इंद्रिय का आग्रह है तो विरह आत्मा और हृदय की पुकार है। विद्यापति ने 'पदावली' में प्रेम के वियोग पक्ष का भी अनुपम रूप में चित्रण किया है। वियोग दशा का एक अत्यन्त मार्मिक उदाहरण निम्नलिखित है -

माधव कत परबोधब राधा ।
हा हरि हा हरि कहतहि बेरि बेरि
अब जिउ करब समाधा ॥
धरनि धरिये धनि जतनहि बइसइ ।
पुनहि उठए नहिं पारा ।
सहजहि बिरहिन जण मँहे तापिनि ।
बोरि मदन- सर- धारा ॥

(बेनीपुरी2011:144)

शंकरदेव की 'कीर्तन-घोषा' मूलतः भक्तिप्रधान काव्य है; परंतु इसमें शृंगार रस का निरूपण भी हमें प्रमुखरूप से 'कीर्तन-घोषा' के निम्नलिखित तीन खण्डों में देखने को मिलता है - गजेंद्रोपाख्यान, हरमोहन और रासक्रीड़ा ।

'कीर्तन-घोषा' के 'रासक्रीड़ा' प्रसंग का एक उदाहरण निम्नलिखित है -

बाहु मेलि काको आलिंगि धरि ।
कारो स्तन नखे परशे हरि ॥
मुख चाया कारो तोलंत हास ।
मातंत काको करि परिहास ॥
लंत वस्त्र काढ़ि बढ़ाया रंग ।
बेकत करंत गुपुत अंग ॥

(गोस्वामी1989:206)

अर्थात किसी को हरि ने बाहें फैलाकर आलिंगन किया। नखों से किसी के स्तन का स्पर्श

किया। किसी का चेहरा देखकर हरि हँसे। वे परिहास करते हुये किसी से बातें करते हैं। वे वस्त्र छीन लेते हैं और गुप्त अंग को बिवस्त्र करते हैं।

'हरमोहन' खण्ड में चित्रित संयोग शृंगार का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत है -

प्राणजाय शंकरर काम उतपाते ।
महावेगे खोपात धरिल बामहाते ॥
रह प्राणेश्वरी बुलि करि आलिंगन ।
महाकाम भोले दिल मुखत चुम्बन ॥

(गोस्वामी1989:134)

अर्थात काम के उत्पात से शंकर के प्राण निकलनेवाले हैं। महावेग से वे बाए हाथ से जुड़ा पकड़ते हैं। प्राणेश्वरी रुक जाओ- कहकर वे आलिंगन करते हैं। काम की तीव्रता से वे मुख में चुंबन करते हैं। यहाँ शंकर को चित्रण भगवान के विष्णु के मोहिनी रूप को देखकर कामपीड़ा में पीड़ित एक कामुक के रूप में किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शंकरदेव ने 'कीर्तन-घोषा' में भक्ति के साथ-साथ शृंगार का चित्रण एक रससिद्ध साहित्यकार की भांति ही किया है ।

साम्य

विद्यापति की 'पदावली' और शंकरदेव की 'कीर्तन-घोषा' शीर्षक पुस्तकों में शृंगार का चित्रण किया गया है। रूप-वर्णन, रति-क्रीड़ा आदि का दोनों ही कृतियों में चित्रण हुआ है ।

विद्यापति ने 'पदावली' में शृंगार वर्णन के लिए नायक-नायिका के रूप में कृष्ण और राधा को लिया। शंकरदेव ने भी राधा-कृष्ण के प्रेम प्रसंग का चित्रण किया है ।

विद्यापति और शंकरदेव कृत क्रमशः 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' की एक और निराली विशेषता है, वह है इसकी लोकोन्मुखता। दोनों कवियों ने ही अपनी-अपनी रचनाओं में लोक-जीवन एवं ग्रामीण परिवेश की विविध घटनाओं, परिघटनाओं को प्रसंगवशः अपनी मौलिक प्रतिभा से चित्रण किया है। लोकमानस में प्रेमी–प्रेमिका जिसप्रकार प्रेमावेग में तल्लीन होते है, एक–दूसरे को पाने के लिए व्यग्र रहते हैं, उनका चित्रण दोनों कवियों ने 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' में किया है।

वैषम्य

विद्यापति ने 'पदावली' में संयोग के साथ वियोग दशा का भी चित्रण किया है। जबकि शंकरदेव ने संयोग का चित्रण किया, वियोग का नहीं।

शंकरदेव ने केवल कीर्तन-घोषा के तीन खण्डों में ही शृंगार रस का चित्रण किया है। उस अनुपात में 'पदावली' में विद्यापति ने शृंगार रस का चित्रण प्रचुर मात्रा में किया हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम यह निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि विद्यापति और शंकरदेव दोनों ही विलक्षण प्रतिभा के अधिकारी थे। विद्यापति और शंकरदेव की क्रमशः 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' दोनों ही अपने-अपने खास स्वरूप, खास रंग-ढंग रखनेवाले भारतीय साहित्य की दो अमूल्य कृतियाँ है। भक्ति और शृंगार दोनों ही दृष्टियों से 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' में चाहे अधिक हो या कम मात्रा में चित्रण उत्कृष्ट रूप में हुआ हैं। साहित्यिकता की दृष्टि से दोनों ही कृतियाँ उच्च कोटि की रचनाएँ हैं। अतः भक्ति भावना और शृंगार भावना से ओतप्रोत 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' का अपने-अपने प्रांत तथा भारतीय जनमानस में महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

ग्रंथ-सूची

कपूर, शुभकार. विद्यापति की पदावली. लखनऊ : गंगा पुस्तकालय कार्यालय, 1968.

गोस्वामी, यतीन्द्रनाथ. कीर्तन-घोषा आरु नाम-घोषा. गुवाहाटी : ज्योति प्रकाशन, 1989.

दीक्षित, आनंदप्रकाश. विद्यापति. ग्वालियर : साहित्य प्रकाशन मंदिर.

बेनीपुरी, रामवृक्ष. विद्यापति पदावली. इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 2011.

मजुमदार, तिलकचन्द्र. श्रीमंत शंकरदेवः साहित्य संस्कृतिर जिलिङनि. गुवाहाटी : बनलता प्रकाशन, 2014.

बायन, भवजित. सर्बभारतीय भक्ति आंदोलन आरु शंकरदेवर कीर्तन-घोषा. गुवाहाटी:पाहि प्रकाशन, 2014.

संपर्क-सूत्र
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
सोणापुर कॉलेज
सोणापुर, असम
ई-मेइल: barnalibaishya86@gmail.com
मोबाइल : 6001317554